What will I write 7

It’s 1 am at night now-
Everybody in the house is in deep sleep switching off the lights,
I'm lying on the floor,
Scribbling on the pages in the dark.
God knows what I want to write:
It's a strange black night
Present in the Earth with deep dark future,
Shall I write about
How many millions of boys and girls are unemployed?
Or shall I write about the life of my house maid?
Her name is Rakhi.
Her duty hours are 8am to 4pm everyday .
She comes to Tollygunge from the distant Laxmikantapur
Everyday.
She rides the bicycle for 30minutes to the station,
She rests her cycle in the station
And boards the train at 5:20am;
She gets down at Baghajatin at 7am.
Then she walks for 40minutes to my home-
All these for eight thousand rupees a month.
It's a terrible toil of sixteen hours including the journey;
What will I write?

I told her, "Rakhi, you work so hard everyday
You stay here instead of doing the journey."
"Brother,my parents got me married at the age of fourteen,
After ten years, my husband drove me out of the house.
I live at my maternal house with my son.
There's nobody to look after my old parents."
The woman leaves at 4pm everyday and Reaches home at 9pm in the same way
Hanging like a monkey in the crowded train.
"Brother, I cook at 3am and leave my house,
Again when I return home and cook,
Then people can eat."
And I'm thinking, she even cooks at my place
For eight hours.

What will I write?

Rakhi couldn’t come for this lockdown for a month.
Then one fine day,
She came to my house cycling for 3hours.
She works the whole day like crazy-
No dash of tiredness, she's always with a smile..
She goes home once a month for three days
Cycling for three hours!
What will I write?

Here I'm searching the pen paper in the deep dark
For the sake of writing something,
On the other side there's deep darkness,
In face of the millions of unemployed Indians,
On another side, the housemaid
Gets up from the bed in the deep darkness,
Takes up the responsibility
Of her son and old parents' future everyday -
Extremely heavy a future:
What will I write?
Here it's a deadly deep black night.

(২৪) কি লিখব আমি? (1)

এখন রাত একটা।
সারাদিন অফিস করে বাড়ির সবার সঙ্গে মিশে,
আমি মেসেতে বসে আছি।
অনেকক্ষণ আঁকিবুকি করে লিখে চলেছি আমার খাতায়,
কি লিখব কেমন জানে,
অন্তত সুন্দর কালো রাত
সুন্দর কালো ভবিষ্যতে নিয়ে থাকা সোনা পৃথিবীতে,
ছোট ছোট ~~আমি~~ ছেলেমেয়েদের [illegible]
অনিশ্চয়তা নিয়ে লিখব?
নাকি লিখব আমার বাড়ির কাজের মেয়েটির জীবন?
রাখি ওর নাম।
রোজ সকাল আটটা থেকে বিকেল চারটে
~~ওর~~ অবধি ওর ডিউটি আমাদের।

সুদূর লক্ষ্মীকান্তপুর থেকে টালিগঞ্জ আসে ট্রেন।
তিরিশ মিনিট সাইকেল চালিয়ে স্টেশন,
স্টেশনে সাইকেল রেখে ভোর
পাঁচটা কুড়ির ট্রেন ধরে
সাতটা নাগাদ বাঘাযতীন স্টেশনে নামে,
তারপর চল্লিশ মিনিট হেঁটে আমার বাড়িতে আসে।
মাসমাইনে আট হাজার টাকায়
যাতায়াত মিলিয়ে সাড়ে খাটুনি রোজ ঘণ্টার।
কি লিখব আমি?
বলেছিলাম, "তুমি তো কষ্ট করে রোজ
যাতায়াত না করে এখানে থেকে যাও।"
"দাদা, বৌদি বহুদিন হলো বাপ-মা ছেড়ে দিয়েছিল,
দশ বছর সংসার করার পর বর তাড়িয়ে দিয়েছে।
বাপের বাড়ি ছেলেকে নিয়ে থাকি,

(২ [illegible])

মুখো তুমি কে কোথায় কেউ নেই।
"মেয়েটা একহাতে নিকেল দড়ি নিয়ে নেমেছে
খেলেন বড়ুবেলা অবস্থায় হাত নেড়ে বাড়ি ফেরে।
"দাদা, তোর জিনেয় উঠে রান্না কর আমি
আবার বাড়ি গিয়ে রান্না করে তবে খাওয়া হবে।"
তাই আমি ভাবছি ওদের আমার বাড়িতে নেমতে
যার আটচালাটা রান্না ঘরের মধ্যেও।
কি নিশ্চয় আমি?
এই লকডাউনে একমাত্র আসতে পারেনি ওরাই
তাহলে হঠাৎ একদিন
ডিলিভারিটা সাইকেল চালিয়ে চলে এসেছে আমার বাড়ি।
পাড়ের মধ্যে কাজ করে সারাদিন
তোলো ক্লান্তি নেই, মুখে হাসি
সাথে একসাথে তিনজনের জন্য বাড়ি যায়

(৩১)

তিন চাকা সাইকেল চালিয়ে!

কি লিখব আমি?

একদিকে সত্তর- ঊর্ধ্বদের হাতের রেখাচিত্র

বেশি আর কিছু লিখব বলে,

ওদিকে সত্তর- ঊর্ধ্বদের চামড়ায় ঝুলেছে

কোটি কোটি ভাঁজ জীবনের- চোখে মুখে,

অন্যদিকে সত্তর- ঊর্ধ্বদের- ধুম থেকে

এই বড়ো- কাজের- অংশটা

ইহা মন-আ-কেন্দ্র ভেজেও নিজের কাঁধে

তুলে নেয় তারা,

জীবনের ভারী বোঝাও।

কি লিখব আমি?

এদিকে কুড়িতে সত্তর লোক মাত।

क्या लिखूँ मैं(7)

अभी रात के एक बज रहे हैं।

लाइट ऑफ करके घर के सभी लोग गहरी नींद में हैं।

मैं फर्श पर सोया हूँ।

अँधेरे में पन्नों के बाद पन्ने लिख चला था,

भगवान जाने क्या लिखूँ मैं

अजीब सी गहरी रात।

धरती पर घनघोर अंधकारमय भविष्यत् लेकर आया है,हज़ारों लड़के-लड़कियों की बेरोजगारी,अनिश्चयता,

उसको लेकर लिखूँ

या लिखूं मेरे घर की कामवाली की जिंदगी की कथा

राखी नाम है उसका,

रोज़ सुबह चार बजे से शाम के चार बजे तक उसका ड्यूटी ऑवर है।

रोज़ दूर के लक्ष्मीकांतपुर से टालीगंज आती है।

तीस मिनट साइकिल चलकर स्टेशन आती,

स्टेशन में साइकिल रखकर,

प्रातः पाँच बीस की ट्रेन पकड़ती है।

सात बजे बाघजतिन स्टेशन में उतरती है।

फिर चालीस मिनट चलकर मेरे घर में आती है।

आठ हज़ार रूपए तनख्वाह है महीने की,

जाना-आना मिलाकर सोलह घंटे गधे की तरह काम करती हैं।

क्या लिखूँ मैं

कहा था -राखी,रोज़ इस तरह से जाना-आना छोड़ दो,थकान कम होगी,

यही रह जाओ।

भैया,चौदह साल की थी जब माँ-बाप ने शादी करवा दी थी,

दस साल घर करने के बाद पति ने निकाल दिया।

बेटे को लेकर मायके में रहती हूँ।

उन वृद्धों को देखने के लिए कोई नहीं हैं।

लड़की रोज़ शाम के चार बजे,

ट्रेन में किसी तरह लटककर रात के नौ बजे घर लौटती है।

भैया,भोर के तीन बजे उठकर,खाना पकाती हूँ,

फिर घर पहुंचकर खाना पकाती हूँ,

तब जाकर खाना होता है।

और मैं सोच रहा हूँ,

वह तो मेरे घर में आकर भी,

लगातार आधा घंटा रसोईघर में बिताती है।

क्या लिखूं मैं

इस लॉक डाउन में एक महीना आ नहीं पायी थी राखी,

उसके बाद अचानक,

एकदिन तीनघंटे साइकिल चलाकर मेरे घर आ गयी।

पागलों की तरह काम करती दिनभर,

न कोई थकान,चेहरे पर सिर्फ मुस्कान,

महीने में एकबार तीन दिन के लिए घर जाती है।

तीन घंटे तक साइकिल चलाकर,

क्या लिखूं मैं ?

एकतरफ घने अँधेरे में पेन और कॉपी ढूंढता फिरता हूँ,

कुछ लिखूंगा,इसलिए,

दूसरी तरफ , नौकरी खोये हुए करोड़ों भारतवासियों,के चेहरे और आँखों पर

छाया घना अँधेरा।

तीसरी तरफ,

घनघोर अँधेरे में ही

नींद से जग जाती है ,

कामवाली लड़की ,

बूढे माँ बाप और बेटे का भविष्य रोज़ अपने

कन्धों पर उठा लेती है।

असंभव और भारी भविष्य।

क्या लिखूँ मैं ?

यहाँ तो घनी काली अँधेरी रात है ।